69

पुनरुत्थान

(28:1-15)

मसीह का पुनरुत्थान यह दिखाते हुए कि वह सचमुच में मृत्यु पर विजयी हुआ था सुसमाचार की कहानी के मत्ती के विवरण के चरम का काम करता है (28:1-7)। उस रविवार जी उठे मसीह को मिलने वाली स्त्रियां भक्ति और आराधना में उसके आगे झुक गई थीं। उसने उन्हें जाकर चेलों से उसे गलील में मिलने के लिए कहने भेजा (28:8-10)। उसी समय रोमी पहरेदारों को यहूदी अगुओं द्वारा खाली कब्र की सच्चाई को दबाने के लिए घूस दी गई थी (28:11-15)। सुसमाचार के इस विवरण का समापन गलील में अपने चेलों के साथ मसीह की अधिकारात्मक मुलाकात और उन्हें ग्रेट कमीशन अर्थात राजा के आत्मिक राज्य को आगे बढ़ाने के आदेश देने के साथ होता है (28:16-20)।

खाली कब्र (28:1-7)

[1]सब्त के दिन के बाद सप्ताह के पहिले दिन पौ फटते ही मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्र को देखने आईं। [2]और देखा एक बड़ा भुईंडोल हुआ, क्योंकि प्रभु का एक दूत स्वर्ग से उतरा, और पास आकर उसके पत्थर को लुढ़का दिया, और उस पर बैठ गया। [3]उसका रूप बिजली का सा और उसका वस्त्र पाले की नाईं उज्ज्वल था। [4]उसके भय से पहरुए कांप उठे, और मृतक समान हो गए। [5]स्वर्गदूत ने स्त्रियों से कहा, कि तुम मत डरो: मैं जानता हूं कि तुम यीशु को जो क्रूस पर चढ़ाया गया था ढूंढती हो। [6]वह यहां नहीं है, परन्तु अपने वचन के अनुसार जी उठा है; आओ, यह स्थान देखो, जहां प्रभु पड़ा था। [7]और शीघ्र जाकर उसके चेलों से कहो, कि वह मृतकों में से जी उठा है; और देखो वह तुम से पहिले गलील को जाता है, वहां उसका दर्शन पाओगे, देखो, मैं ने तुम से कह दिया।

आयत 1. विस्तार से बताते हुए कि स्त्रियां यीशु की कब्र देखने कब गई थीं, एक कालक्रमिक टिप्पणी जोड़ी गई है, **सब्त के दिन के बाद सप्ताह के पहिले दिन पौ फटते ही**। इससे भी बड़ी बात यह है कि यह हवाला उस समय को चिह्नित करता है, जब यीशु मुर्दों में से जी उठा था। NEB के अनुवाद में है कि ''सब्त खत्म हो गया था और रविवार का दिन निकलने को था।''

कालांतर में इस बात पर बहस हुई है कि यहां यह हवाला रविवार प्रातः के बजाय शनिवार सायं का था। ''के बाद'' के लिए यूनानी शब्द (*opse*) का इस्तेमाल कई बार विशेषण के रूप में होता है; वहां पर इसका अर्थ ''देरी'' या ''देर शाम'' हो सकता है। परन्तु यहां उपसर्ग के रूप में इस्तेमाल किए गए शब्द का अर्थ है ''बाद में।''[7] इसके अलावा अनुवादित क्रिया शब्द ''पौ फटते ही'' (*epiphōskō* से) का अर्थ ''आगे बढ़ना'' हो सकता है, परन्तु यहां पर ''आगे

चमकना'' या ''भोर'' अधिक मेल खाता है।[2] बहुवचन रूप (*sabbatōn*) आयत 1 में दो बार मिलता है। पहले इस शब्द का अर्थ ''सब्त'' (सातवां दिन) है और फिर वाक्यांश में इसका अर्थ ''सप्ताह के पहले दिन'' (सात दिन)[3] का संकेत है।[4]

स्त्रियां कब्र पर सब्त के दिन नहीं आई थीं, क्योंकि यह विश्राम का दिन था (लूका 23:56)। वे सब्त बीत जाने के बाद (हमारा शनिवार शाम) नहीं आई थीं क्योंकि तब अंधेरा हो चुका होगा। इसके विपरीत वे रविवार सुबह-सुबह आई थीं। मरकुस ने कहा कि वे ''सप्ताह के पहिले दिन बड़े भोर, जब सूरज निकला ही था, कब्र पर आईं'' (मरकुस 16:2; NIV)। लूका ने कहा है कि ''सप्ताह के पहले दिन बड़े भोर को'' (लूका 24:1)।[5] स्त्रियों का सबसे पहले सुबह-सुबह आना मसीह के प्रति उनके गहरे समर्पण का एक और संकेत है।

यहां केवल **मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम** का ही नाम है। उन्होंने दूर से यीशु को मरते हुए देखा था और उन्होंने उस स्थान को भी देखा था, जहां उसकी लाश को दफ़नाया गया था (27:55, 56, 61 पर टिप्पणियां देखें)। मरकुस ने अपनी सूची में सलोमी का नाम दिया है (मरकुस 16:1) जबकि लूका ने योअन्ना और ''अन्य स्त्रियों'' जोड़ा है (लूका 24:10; देखें 8:3)।

ये स्त्रियां **कब्र को देखने** आई थीं और साफ कहें तो वे यीशु की देह पर मसाले लगाने के लिए आई थीं (मरकुस 16:1)। यूसुफ और निकुदेमुस ने पहले उसकी देह पर मसाले लगा दिए थे (यूहन्ना 19:39, 40), परन्तु उन्होंने सांय 6:00 बजे सब्त आरम्भ होने से पहले-पहले उसकी लाश को दफ़नाने के लिए जल्दबाजी में ऐसा किया था। स्त्रियां और बेहतर ढंग से उसका कफ़न दफ़न करना चाहती थीं।

कब्र की ओर जाते हुए रास्ते में वे बातें कर रही थीं कि उस बड़े पत्थर को कैसे हटा सकेंगी, जो कब्र के मुंह पर लुढ़काकर रखा गया था (मरकुस 16:3)। उन्हें यह पता नहीं था कि पिलातुस ने रोमी मोहर लगाकर कब्र के द्वार पर यहूदी अगुओं की चिंता के अनुसार पहरा बिठा दिया था (27:62-66)। स्पष्टतया स्त्रियों को उम्मीद थी कि यीशु की देह कब्र में ही होगी।

आयत 2. यूनानी भाषा का शब्द (*idou*) जिसका अनुवाद **देखो** हुआ है, घटनाओं की उत्सुकता को बताने के लिए बार-बार इस्तेमाल किया गया है (28:2, 7, 9, 11, 20)। उस समय उस इलाके में **एक बड़ा भुईंडोल हुआ**। माइकल जे. विलकिंस के अनुसार, ''फलस्तीन की प्रमुख भौगोलिक विशेषताओं में से एक इस पर भूकम्पों के खतरे का होना था।'' विशेषकर यह बात ''यरदन की दर्रे वाली तराई के उस बड़े ज़ोन में होने के कारण'' सत्य है ''जो 683 मील से अधिक खाड़ी के आरम्भ से टाउरस रेंज के कदमों तक उत्तर की ओर फैली है।''[6] परन्तु यह कोई साधारण भूकम्प नहीं था। अनुवाद हुआ यूनानी संयोजक **क्योंकि** (*gar*) कारण का संकेत देता है। **प्रभु का एक दूत** इसके लिए जिम्मेदार था। बाइबल में भूकम्पों का उल्लेख आम तौर पर परमेश्वर और स्वर्गदूतों के दिखाई देने और न्याय के कार्यों के सम्बन्ध में मिलता है (1 राजाओं 19:12; मत्ती 24:7; प्रेरितों 16:26; प्रकाशितवाक्य 6:12; 8:5; 11:13, 19; 16:18)।[7] यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने और जी उठने पर दोनों बार भूकम्प आया (27:51; 28:2)।

मत्ती और मरकुस में यहां केवल एक ही स्वर्गदूत की बात है। मरकुस ने उसे ''एक जवान ... श्वेत वस्त्र पहिने हुए'' के रूप में दिखाया (मरकुस 16:5)। दूसरी ओर लूका ने ''दो पुरुष

झलकते वस्त्र पहिने हुए'' दिखाए (लूका 24:4)। यूहन्ना ने भी कब्र पर ''दो स्वर्गदूतों'' की बात कही (यूहन्ना 20:12)। मत्ती द्वारा आमतौर पर दो जनों का इस्तेमाल हुआ है, जबकि सुसमाचार के अन्य लेखकों ने अकेले का इस्तेमाल किया है (8:28; 20:30; 21:2 पर टिप्पणियां देखें)।

यह अन्तर क्यों? मत्ती और मरकुस उस पर ज़ोर दे रहे थे, जिसने मुख्य संदेश दिया जबकि लूका ने संकेत दिया कि दोनों स्वर्गदूतों ने स्त्रियों से बातें कीं (लूका 24:5)। अलग-अलग लोगों और दो स्वर्गदूतों के साथ उन्होंने अलग-अलग दृष्टिकोण दिए। एक स्वर्गदूत शायद किसी प्रमुख स्थान पर बैठा था, जबकि दूसरा कम प्रमुख स्थान में था। दोनों ने एक ही समय में या बारी बारी से स्त्रियों से बात की। सुसमाचार के चारों लेखकों ने मुख्य विवरण दिए हैं।

स्वर्गदूत से उतरा, और पास आकर उसके पत्थर को लुढ़का दिया, और उस पर बैठ गया (27:60 पर टिप्पणियां देखें)। स्वर्गदूत की सामर्थ के बड़े बल से पत्थर कब्र पर से हट गया, जिससे भूकम्प आ गया। पत्थर को लुढ़काकर स्वर्गदूत ने यहूदी अगुओं द्वारा इस पर लगाई गई मोहर तोड़ डाली (27:66 पर टिप्पणियां देखें)। उसने स्त्रियों की दुविधा भी दूर कर दी थी कि इसे कब्र के सामने से कौन हटाएगा (मरकुस 16:3)। पत्थर के ऊपर उसका बैठना पूरा होने को, अधिकार को और परमेश्वर के मुख्य उद्देश्य को बताता है।

आयत 3. स्वर्गदूत का रूप बिजली का सा और उसका वस्त्र पाले की नाईं उज्ज्वल था (देखें मरकुस 16:5; लूका 24:4; यूहन्ना 20:12)। मत्ती में जोड़ा गया विवरण स्वर्गदूत की चमक को पकड़ता है। ''बिजली'' का सम्बन्ध ''स्वर्गीय जीवों के रूप से (दानिय्येल 10:6), शैतान के गिरने (लूका 10:18) और मनुष्य के पुत्र के आने से (मत्ती 24:27)'' जोड़ा जाता है।[8] पवित्र शास्त्र में सफेद पहरावा शुद्धता और पवित्रता का प्रतीक है (दानिय्येल 7:9; मत्ती 17:2; प्रकाशितवाक्य 3:4, 5, 18; 4:4; 6:11; 7:9, 13, 14; 19:14)। ''हिम से श्वेत'' बाइबली तुलना में भी आम इस्तेमाल होता है (भजन संहिता 51:7; यशायाह 1:18; दानिय्येल 7:9; प्रकाशितवाक्य 1:14)।

आयत 4. पहरुए जो कब्र पर पहरा दे रहे थे भयभीत हो गए और [स्वर्गदूत के] **भय से कांप उठे, और मृतक समान हो गए** (देखें प्रकाशितवाक्य 1:17)। रॉबर्ट एच. गुंड्री के शब्दों का इस्तेमाल करें तो यहां ''एक व्यंग्यपूर्ण पासा पलटना है, यीशु जीवित है और पहरेदार मरे हुए के समान लगते हैं।''[9] बाद में उनके होश आने पर उनमें से कुछ लोग, जो कुछ हुआ था, वह सब यरूशलेम में जाकर प्रधान याजकों को बताने लगे (28:11)।

आयत 5. स्त्रियों को कितना आश्चर्य हुआ होगा जब कब्र पर पहुंचकर उन्हें लुढ़का हुआ पत्थर मिला! इसे यीशु को बाहर निकालने के लिए नहीं हटाया गया था क्योंकि वह पत्थर वहां पर रखा रहने के बावजूद उसमें से निकल सकता था।[10] इसके बजाय यह पत्थर उसके चेलों के अन्दर आने के लिए हटाया गया था। कब्र में जाकर स्त्रियों ने देखा कि यीशु की लाश वहां नहीं थी और ''वे इस बात से भौचक्की हो रही थीं'' (लूका 24:3, 4)।

स्वर्गदूत ने स्त्रियों को यह कहते हुए कि ''**तुम मत डरो**'' आश्वस्त किया। कई अवसरों पर स्वर्गदूत इस अवश्य माननीय शब्द के साथ अपनी टिप्पणियां देते थे (1:20; लूका 1:13, 30; 2:10)। ईश्वरीय दूत होने के कारण वे धर्मियों को धमकाने नहीं आए थे।[11] इसके बजाय स्वर्गदूत उन्हें यह बताकर शांति देने आए थे कि परमेश्वर ने उनकी भलाई के लिए हर बात करवानी थी।

चिन्ता और भय को दूर भगाने का काम परमेश्वर में भरोसा करके होता है।

स्वर्गदूत ने आगे कहा, **''मैं जानता हूं कि तुम यीशु को जो क्रूस पर चढ़ाया गया था ढूंढती हो।''** उसे मालूम था कि वे क्रूस पर चढ़ाए गए यीशु की लाश की तलाश में कब्र पर आई थीं (1 कुरिन्थियों 1:23; 2:2; गलातियों 3:1)।

आयत 6. स्त्रियां, जिन्होंने यूसुफ को यीशु को दफ़नाते हुए देखा था (27:61) अब खाली कब्र को देखती हैं। स्वर्गदूत ने छूट गई जानकारी दे दी थी कि वह **''जी उठा है।''** यूनानी क्रिया शब्द (*egeirō* से; *ēgerthē*) कर्मवाच्य में है, जिस कारण कुछ अनुवादों में ''वह जी उठ चुका'' है (TEV; NEB; NRSV; NLT; JNT)। कर्मवाच्य परमेश्वर की गतिविधि के गति में होने का संकेत देता है। CEV में ''परमेश्वर ने उसे जीने के लिए उठा लिया है'' अनुवाद के साथ इस विचार को स्पष्ट कर दिया गया है। यहूदी अगुओं ने जीवन के दाता को मारकर यीशु को क्रूस पर चढ़ा दिया था; परन्तु परमेश्वर ने उसे मुर्दों में से जिला दिया था (प्रेरितों 3:14, 15)।

सुसमाचार के लेखकों ने यीशु की आत्मा के उसके शरीर में आ जाने पर उसके वास्तविक पुनरुत्थान का विवरण नहीं दिया। उन्होंने कब्र के उसके कपड़ों के निकल जाने (देखें यूहन्ना 20:4-7) या उसके कब्र में से निकल जाने की बात नहीं बताई। इसके बजाय उन्होंने बताया कि (1) कब्र खाली थी, (2) यीशु फिर से जीवित था, और (3) उसका पुनरुत्थान पुष्टि होने की प्रक्रिया में था।

अपने वचन के अनुसार वाक्यांश में संकेत है कि पुनरुत्थान यीशु की बार-बार की गई भविष्यवाणियों का पूरा होना था (27:62, 63 पर टिप्पणियां देखें)। वह अपने चेलों को यह सच्चाई हमेशा बताता था, तब भी जब उनके लिए सहन करना कठिन होता था (16:21-23; 26:21, 22, 31-35)। अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान की यीशु की भविष्यवाणी से उसके चेलों को इस सच्चाई को धीरे-धीरे मानने में सहायता मिली कि वह सचमुच में जीवित था (लूका 24:6, 8)।

स्त्रियां चाहे कब्र में पहले देख चुकी थीं (लूका 24:3) पर फिर भी स्वर्गदूत ने आकर उन्हें इसे और निकट से देखने के लिए बुलाया, **''आओ, यह स्थान देखो, जहां प्रभु पड़ा था।''** वह उनके मनों में कोई संदेह नहीं रहने देना चाहता था कि मसीह की देह वहां नहीं थी।

बाइबल चाहे कुछ लोगों के जी उठने की बात बताती है, जिनमें से अधिकतर यीशु की सेवकाई के दौरान जी उठे थे, परन्तु उसका जी उठना निराला ही था। जो लोग पहले जी उठे थे वे दूसरी बार मर गए थे। यीशु दोबारा कभी न करने के लिए जी उठा था (रोमियों 6:9)। हर यहूदी अपने और सब लोगों के शारीरिक पुनरुत्थान की उम्मीद रखता था; इस रविवार की सुबह यीशु उस लम्बी प्रतीक्षा का नाटकीय ढंग से पहला फल बना (1 कुरिन्थियों 15:20, 23)।[12] यह सच तो है पर इस बात को याद रखा जाना आवश्यक है कि *अनन्त जीवन* पुनरुत्थान या जी उठना केवल उन्हीं के लिए है जो मसीह पर भरोसा रखते और उसकी आज्ञा मानते हैं (1 कुरिन्थियों 15:57, 58)।

आयत 7. स्वर्गदूत ने स्त्रियों को **जाकर उसके चेलों से** यह कहने को कहा कि यीशु फिर से जीवित हो गया था। ईश्वरीय दूत ने विशेष रूप से पतरस को अलग किया (मरकुस 16:7)। कोई संदेह नहीं कि यह तीन बार उसके इनकार करने के बाद उसे उम्मीद देने के लिए किया

गया था (मत्ती 26:69-75)।

स्त्रियों को चेलों को यह भी बताने की आज्ञा दी गई थी कि यीशु [उन] **से पहिले गलील को जाता है**। मरकुस 16:7 में ये अतिरिक्त शब्द हैं "जैसा उसने तुम से कहा था।" यह निर्देशक उसी के अनुसार था, जो यीशु ने अपनी मृत्यु से पहले उन्हें दिया था (26:32 पर टिप्पणियां देखें)।

प्रभु और उसके प्रेरितों ने एक परिचित स्थान अर्थात उस पहाड़ पर मिलना था जिसे यीशु ने ठहराया था (28:16)। गलील वह इलाका था, जहां वे सब रहते थे। यह वह इलाका भी था जहां यीशु अपनी सेवकाई में अधिकतर समय रहा था। गलील में उन्हें यरूशलेम के अगुओं की ओर से किसी भी प्रकार से हस्तक्षेप का पता चल जाना था।

पुकित गवाह (28:8-10)

[8]और वे भय और बड़े आनन्द के साथ कब्र से शीघ्र लौटकर उसके चेलों को समाचार देने के लिए दौड़ गईं। [9]और देखो, यीशु उन्हें मिला, और कहा; "सलाम" और उन्होंने पास आकर और उसके पांव पकड़कर उसको दण्डवत किया। [10]तब यीशु ने उनसे कहा, मत डरो; मेरे भाइयों से जाकर कहो, कि गलील को चले जाएं वहां मुझे देखेंगे।

आयत 8. उलझन भरे मन लेकर वे स्त्रियां **कब्र से शीघ्र लौट** गईं। मरकुस 16:8 कहता है, "वे निकलकर कब्र से भाग गईं; क्योंकि कम्पकपी और घबराहट उन पर छा गई थी; और उन्होंने किसी से कुछ न कहा, क्योंकि डरती थीं।" वे **भय** से सहम गई थीं क्योंकि उन्होंने स्वर्गदूतों को देख लिया था; और भयदायक पुनरुत्थान का समाचार पा लिया था। उस अनुभव ने उन्हें पूरी श्रद्धा अर्थात भय की अच्छी किसम से भर दिया था। इस समाचार ने कि मसीह मुर्दों में से जी उठा है (28:6) ये भी उन्हें **बड़े आनन्द** से भर दिया था। चाहे उन्होंने अभी यीशु को देखा नहीं था पर वे स्वर्गदूत की गवाही और खाली कब्र से ये दोनों भावनाएं उमड़ आई थीं। जिस कारण ये स्त्रियां **उसके चेलों को समाचार देने के लिए दौड़ गईं**।

आयत 9. रास्ते में **यीशु उन्हें मिला, और कहा; "सलाम।"** यहां उन्हें अपनी आंखों से जी उठे प्रभु को देखने का सौभाग्य मिला। चेलों से मिलकर पुनरुत्थान की गवाही किसी दूसरे द्वारा दी गई जानकारी की नहीं बल्कि आंखों देखी भी होनी थी।

स्त्रियों ने **पास आकर और उसके पांव पकड़कर उसको दण्डवत किया**। "दण्डवत किया" के लिए शब्द (*proskuneō*) मत्ती में तेरह बार मिलता है। कई बार इसका इस्तेमाल आदर दिखाने के लिए किसी के पांवों पर झुकने के लिए है पर अन्य मामलों में यह आत्मिक आराधना का संकेत देता है। आयतें 9 और 17 में इस शब्द का इस्तेमाल आराधना के अर्थ में किया गया है (2:2 पर टिप्पणियां देखें)। यीशु को अपनी ईश्वरीयता के कारण ऐसा सम्मान मिला (14:33)। इसके विपरीत नये नियम में स्वर्गदूतों और मनुष्यों ने इस सम्मान को लेने से इनकार किया (प्रेरितों 10:25, 26; 14:11-15; प्रकाशितवाक्य 22:8, 9)।

आयत 10. यीशु ने स्त्रियों से चेलों को यह संदेश देने के लिए कहा जो उन्हें स्वर्गदूत के द्वारा दिया गया था (28:7): **"मत डरो; मेरे भाइयों से जाकर कहो, कि गलील को चले**

जाएं वहां मुझे देखेंगे।'' यह महत्वपूर्ण बात है कि इस शुभ समाचार को कि यीशु जी उठा है दूसरों को सुनाने के लिए सबसे पहले *स्त्रियों* को ही चुना गया था। यह विवरण सुसमाचार के वृत्तांतों की सत्यता को समझाता है। डग्लस आर. ए. हेयर ने कहा है, ''यहूदी अदालतों में स्त्रियों को सक्षम गवाहों के रूप में नहीं माना जाता था। इस कारण यह स्पष्ट है कि उनकी उपस्थिति इन विवरणों के बाहर के लोगों को प्रभावित करने के लिए नहीं रची गई थी।''[3]

मत्ती यह नहीं बताता कि यीशु से भेंट के बाद इन स्त्रियों के साथ यरूशलेम में क्या हुआ। सुसमाचार के अन्य विवरण उनमें से कुछ घटनाओं को लगाते हैं चाहे पक्के तौर पर उनके कालक्रम की पुनः रचना करना कठिन है।

चेलों ने चाहे अन्त में गलील में यीशु से मिलना था (28:16), पर कम से कम वे एक सप्ताह यरूशलेम में रहे, जिसका अर्थ है कि अखमीरी रोटी का पर्व बीत गया होगा। सुसमाचार के अन्य विवरण संकेत देते हैं कि यीशु इस दौरान उनसे कई अवसरों पर दिखाई देता रहा। अन्य दर्शन उसके पुनरुत्थान और ऊपर उठाए जाने के बीच के चालीस दिन के अन्तराल में ही हुए (प्रेरितों 1:3)।

झूठी रिपोर्ट (28:11-15)

[11]वे जा ही रही थीं, कि देखो, पहरुओं में से कितनों ने नगर में, आकर पूरा हाल महायाजकों से कह सुनाया। [12]तब उन्होंने पुरनियों के साथ इकट्ठे होकर सम्मति की, और सिपाहियों को बहुत चान्दी देकर कहा। [13]कि यह कहना, कि रात को जब हम सो रहे थे तो, उसके चेले आकर उसे चुरा ले गए। [14]और यदि यह बात हाकिम के कान तक पहुंचेगी, तो हम उसे समझा लेंगे तुम्हें जोखिम से बचा लेंगे। [15]सो उन्होंने रुपए लेकर जैसा सिखाए गए थे; वैसा ही किया; और यह बात आज तक यहूदियों में प्रचलित है।

सुसमाचार के लेखकों में से केवल मत्ती ने यीशु की कब्र पर पहरा बिठाए जाने की बात बताई है (27:62-66)। उसने स्वर्गदूत को देखने पर उनके भय (28:4) और उस झूठी खबर की बात का भी उल्लेख किया है जो उन्होंने यहूदी में फैलाई थी (28:11-15)।

आयत 11. अपने आरम्भिक सदमे से सम्भलने के बाद (28:4) [रोमियों] **में से कितनों ने नगर में, आकर पूरा हाल महायाजकों से कह सुनाया।** इन सिपाहियों को पिलातुस हाकिम द्वारा प्रधान याजकों के अधीन वहां लगाया गया था (27:62, 65, 66)। इस कारण उन्होंने उन्हें रिपोर्ट दी। इसके अलावा वे अपने अधिकारियों के सामने यह अंगीकार करने से भी डरते होंगे कि उन्होंने यीशु की देह को कब्र में से निकलने से रोका नहीं था। लाश चाहे चुराई नहीं गई थी पर जो कुछ हुआ था उसकी सच्चाई संदेह से भरे रोमी अधिकारियों को बता पाना कठिन होना था।[14]

सिपाहियों ने प्रधान याजकों को **पूरा हाल कह सुनाया**। मत्ती के ''पूरा'' कहने का क्या अर्थ था? उन्होंने भूकम्प को महसूस किया था, और खाली कब्र को देखा था (28:4)। शायद उन्होंने स्त्रियों को स्वर्गदूत के यह कहते हुए सुना था कि ''वह यहां नहीं है, परन्तु अपने वचन के अनुसार जी उठा है'' (28:6)।

आयतें 12, 13. सिपाहियों की रिपोर्ट से सावधान प्रधान याजकों ने **पुरनियों के साथ**

इकट्ठे होकर सम्मति की। जिस बात का डर था और जिससे बचने के लिए इतनी सावधानियां बरती गई थीं (27:64-66) वही हुआ। लाश गायब हो चुकी थी, कब्र खाली थी और खबर यह थी कि यीशु जी उठा है। पहरेदारों ने स्वयं खाली कब्र देखी और उनकी रिपोर्ट नकारी नहीं जा सकती थी।[15]

यहूदी अगुओं द्वारा अपने विकल्पों पर विचार कर लेने के बाद घूस देने का निर्णय लिया गया। उन्होंने **सिपाहियों को बहुत चान्दी** दी। "बहुत चांदी" के लिए यूनानी वाक्यांश (*arguria hikana*) का अनुवाद "काफ़ी चांदी" या "काफ़ी धन" भी हो सकता है। अन्य शब्दों में यह "घूस इतनी बड़ी" (NEB) थी कि इन लोगों का मुंह बंद हो सकता था। बदले में सिपाहियों ने यह कहते हुए कि **"रात को जब हम सो रहे थे तो, उसके चेले आकर उसे चुरा ले गए"** झूठी अफ़वाह फैलानी थी। अगुओं ने सोचा कि खाली कब्र की इस कहानी से मामला सुलझ जाएगा, जिसका कोई इनकार नहीं कर सकता था।

इस दौरान चेलों की हालत से पता चलता है कि यह झूठ कितना बेतुका था। यीशु के सब चेले उसकी गिरफ्तारी के बाद डर के मारे भाग चुके थे (26:56)। दूर से उसकी पेशी को देखते हुए पतरस ने तीन बार उसका इनकार कर दिया था (26:69-75)। क्रूसारोहरण से चेले और भी परेशान और निराश हो गए थे (लूका 24:21)। यीशु के पुनरुत्थान की बात सुनने के बाद भी वे अभी तक सहमे हुए थे और तालाबंद दरवाजों के पीछे इकट्ठा होते थे (यूहन्ना 20:19, 26)। ये लोग इस हालत में नहीं थे कि यीशु की देह को पाने के लिए रोमी परहेदारों को चुनौती दे सकते। उसकी लाश को चुराकर यह दावा करना कि वह जी उठा है उनके एजेंडे को बढ़ाने वाला नहीं होना था क्योंकि उनके मन में अभी भी सांसारिक राज्य था (26:51; प्रेरितों 1:6)।

आयत 14. नींद आ जाना और कब्र की रखवाली न कर पाना इन पहरेदारों को जान से हाथ धोना पड़ना था। प्रधान याजकों ने सिपाहियों को आश्वस्त किया कि यदि उनकी झूठी खबर की बात **हाकिम के कान तक** पहुंची तो वे उन्हें किसी भी दण्ड से जो पिलातुस दे सकता था बचा लेंगे।

आयत 15. पहरेदारों ने **रुपए लेकर जैसा सिखाए गए थे; वैसा ही किया**। जिस कारण **यह बात आज तक यहूदियों में प्रचलित है**। यह समझना कठिन है कि ऐसी कहानी पर विश्वास क्यों किया गया। वास्तव में यदि पहरेदार सो गए थे तो उन्हें पता कैसे चला कि प्रभु की देह के साथ क्या हुआ था?

आज तक का अतिरिक्त वाक्यांश (देखें 11:23) संकेत देता है कि सुसमाचार के मत्ती के विवरण के लिखे जाने के समय, पुनरुत्थान के शायद लगभग तीस साल बाद, झूठ को प्रसारित किया जा रहा था। जस्टिन मार्टिर के अनुसार यह छल दूसरी सदी में भी व्याप्त था। यहूदी लोग कह रहे थे कि यीशु के "चेलों ने रात को कब्र से उस की देह को चुरा लिया, जहां क्रूस से खोलने के बाद उसे रखा गया था, और ये दावा करके कि वह मरे हुओं में से जी उठा है और स्वर्ग में ऊपर उठा लिया गया है लोगों को [धोखा दे रहे हैं]।"[16]

पुनरुत्थान के बाद के दर्शन (अध्याय 28)

हमारे पास इस बात का क्या प्रमाण है कि यीशु सचमुच में मुर्दों में से जी उठा था? कुल मिलाकर अब यीशु द्वारा जी उठने के बाद के बारह दर्शनों (जिसमें पौलुस को दर्शन भी शामिल है) के बारे में पढ़ते हैं। पुनरुत्थान एक ऐतिहासिक घटना है। लूका ने लिखा है, ''उसने दुख उठाने के बाद बहुत से पक्के प्रमाणों से अपने आप को उन्हें जीवित दिखाया, और चालीस दिन तक वह उन्हें दिखाई देता रहा: और परमेश्वर के राज्य की बातें करता रहा'' (प्रेरितों 1:3)।

यीशु ने मरियम मगदलीनी को दर्शन दिया (मरकुस 16:9; यूहन्ना 20:14-17) और फिर कई स्त्रियों को जो वे कब्र से जा रही थीं (28:9, 10)। लूका और पौलुस से हमें पता चलता है कि उसने पतरस को जब अकेला था दर्शन दिया (लूका 24:34; 1 कुरिन्थियों 15:5)। उसने इम्माउस के मार्ग पर दो चेलों को भी दर्शन दिया जिनमें से एक नाम क्लियोपास बताया जाता है (लूका 24:13-35)। उसने प्रेरितों को इकट्ठे दर्शन दिया- पहले तो तब जब थोमा उनके बीच नहीं था (यूहन्ना 20:19, 24) और फिर उसके अगले सप्ताह जब थोमा सहित सभी वहां पर थे (यूहन्ना 20:26)। बाद में उसने गलील की झील के पास सात प्रेरितों को दर्शन दिया (यूहन्ना 21:1-23)। मत्ती के अनुसार अपने वायदे के अनुसार गलील में उसने एक अनाम पहाड़ पर प्रेरितों को दर्शन दिया और वहां पर उसने उन्हें ग्रेट कमीशन दिया (28:18-20)। पौलुस ने लिखा कि उसने एक ही बार में पांच सौ से अधिक भाइयों को और अपने भाई याकूब को भी दर्शन दिया (1 कुरिन्थियों 15:6, 7)। फिर उसने अपने ऊपर उठाए जाने से पहले ग्यारह को दर्शन दिया (लूका 24:50, 51; प्रेरितों 1:3-12)। पौलुस ने लिखा है ''सब के बाद मुझ को भी दिखाई दिया, जो मानो अधूरे दिनों का जन्मा हूं'' (1 कुरिन्थियों 15:8)।

यदि यीशु मुर्दों में से जी न उठता तो उसके क्या परिणाम होते, इस सब का बताने के बाद पौलुस ने लिखा है, ''परन्तु सचमुच मसीह मुर्दों में से जी उठा है, और जो सो गए हैं उनमें वह पहला फल हुआ'' (1 कुरिन्थियों 15:20)। यीशु ने लाज़र की बहन मरियम को बताया, ''पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं; जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए, तौभी जीएगा। और जो कोई जीवित है, और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा'' (यूहन्ना 11:25, 26)। क्योंकि वह जी उठा इस कारण हम पौलुस के साथ कह सकते हैं, ''परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवंत करता है'' (1 कुरिन्थियों 15:57)।

''वह जी उठा है!'' (28:1-17)

कब्रों के पत्थर उन पर चाहे जिन भी शब्दों में लिखा जाए ऐलान करते हैं कि ''यहां वह पड़ा है जो कभी जीवित था पर अब मर चुका है।'' इसके विपरीत यीशु की कब्र खाली थी और इसमें उन से अलग संदेश था। जिस दिन यीशु मरा वह इतिहास का अत्यधिक काला दिन था, पर तीन दिनों बाद वह बदल गया। पौलुस ने लिखा कि यदि यीशु अभी भी मरा हुआ है तो ''हम सब मनुष्यों से अधिक अभागे हैं'' (1 कुरिन्थियों 15:19)।

हम किस उपयुक्त आधार पर जी उठने में अपना विश्वास जता सकते हैं?

जी उठने की भविष्यवाणी की गई थी (28:6)। पुराने नियम में भविष्यवाणी की गई (भजन संहिता 16:8-11; यशायाह 53:10-12; होशे 6:2) और यीशु ने स्वयं कई बार इसकी बात की (16:21; 17:23; 20:19; 27:40, 63; यूहन्ना 2:19)।

जी उठना साबित हुआ था (28:7-10)। प्रत्यक्षदर्शियों द्वारा इसकी पुष्टि की गई थी और खाली कब्र इसका प्रमाण था। इसके अलावा उसके चेलों के बदले हुए जीवनों से यह प्रमाण मिला कि यीशु मरे हुओं में से जी उठा है। आज कलीसिया अपने जी उठे प्रभु की गवाही के रूप में खड़ी है।

जी उठने को संदेह के साथ लिया गया था (28:11-17)। प्रमाणों के बावजूद आरम्भ से ही लोग शक करते आए हैं। पुनरुत्थान को नकारने के कई प्रयास किए गए हैं।

पुनरुथान से क्या फर्क पड़ता है? यह उनके जीवनों में जो इस पर विश्वास करते और इसे मानते हैं, अनन्तकालिक अन्तर लाता है!

यीशु जीवित है! (28:1-10)

अरमितियाह का यूसुफ और निकुदेमुस यूसुफ की कब्र में यीशु की लाश को दफ़नाने के बाद सब्त के लिए तैयारी करने घर चले गए थे। यदि यह कहानी का अन्त होता तो हमारे पास दुखी होने का हर कारण होना था, क्योंकि हम एक ऐसे संसार में रहते जो बिना आशा के हो। पौलुस ने कुरिन्थुस के मसीही लोगों को लिखा, "यदि हम केवल इसी जीवन में मसीह से आशा रखते हैं तो हम सब मनुष्यों से अधिक अभागे हैं" (1 कुरिन्थियों 15:19)। क्यों? यदि यीशु मुर्दों में से जी नहीं उठा तो हमारा विश्वास और हमारा प्रचार व्यर्थ हैं, प्रेरित और वे दूसरे लोग जिन्होंने कहा कि उन्होंने जी उठने के बाद यीशु को देखा था, सब झूठे थे, हम सब अपने पापों में हैं, जो प्रभु में मर गए हैं उनका भी नाश हुआ और यह संसार अभी तक बिना उद्धारकर्त्ता के है (1 कुरिन्थियों 15:14-18)। इसके विपरीत पौलुस ने दावा किया, "परन्तु सचमुच मसीह मुर्दों में से जी उठा है, और जो सो गए हैं, उन में पहिला फल हुआ" (1 कुरिन्थियों 15:20)। एक और जगह उसने कहा कि यीशु "पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है" (रोमियों 1:4)।

जिस दिन यीशु मरा वह दिन सचमुच में और प्रतीकात्मक अर्थ में मानवीय इतिहास का सबसे काला दिन था। उसके सबसे निकटतम लोगों को भी विश्वास नहीं था कि वे उसे कभी दोबारा जीवित देख पाएंगे। उसके चेले यरूशलेम में कहीं अटारी वाले कमरे में छुपने के लिए चले गए थे (यूहन्ना 20:19)। उन्हें सचमुच में विश्वास नहीं था कि वह जी उठेगा, चाहे उन्होंने उसे दूसरों को मुर्दों में से जिलाते हुए देखा था। परन्तु सप्ताह के पहले दिन यह खबर फैल जाने पर कि उसकी लाश कब्र से गायब है, वे सब के सब बदल गए थे। उसके चेले एक एक करके उसे जीवित देखने की अद्भुत कहानियां दूसरों को बताने लगे थे। कुछ तो उसके साथ चले, उसके साथ बातें की और उन्होंने उसके साथ खाया भी। जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि यह गहरे शोक के कारण भ्रम में पड़े कुछ उन्मादी चेलों की खबरें नहीं थीं। यीशु सचमुच में जीवित था! यही एक तथ्य हर बात को नाटकीय ढंग से बदल देता है।

यीशु के पीछे जाने वाली स्त्रियां (28:1-10)

यहूदी समाज में स्त्रियों को कई बार चाहे कम समझा जाता था,[17] परन्तु यीशु उन्हें बड़े सम्मान के साथ देखता था। वह उनके साथ उसी प्रकार से व्यवहार करता था जैसे आरम्भ में सृष्टि के समय परमेश्वर ने चाहा था। नीचे उन कुछ ढंगों को देखें जिनमें वे उसकी सेवकाई में योगदान देती थीं।

1. वे समान रूप से उद्धार पाने के योग्य थे (यूहन्ना 4:1-42)।
2. उन्हें इसके चेले कहा गया है (12:48-50)।
3. उन्हें निर्देश दिया गया (लूका 10:38-42)।
4. वे यीशु की सेवकाई में योगदान देती थीं (लूका 8:1-3)।
5. वे यीशु के साथ होती थीं (27:55, 56)।
6. वे उसकी सबसे कठिन घड़ी में विश्वासयोग्य थीं (27:55, 56)।
7. पुनरुत्थान की गवाही देने वाली पहली स्त्रियां थीं (28:7, 10; मरकुस 16:9, 10; लूका 24:1-10; यूहन्ना 20:18)।[18]

डेविड स्टिवर्ट

मरियम मगदलीनी (28:1)

बिना किसी शक के मरियम मगलीनी इतिहास की सबसे गलत समझी जाने वाली स्त्रियों में से एक है। उसे वेश्या कहा गया है, परन्तु नये नियम में कहीं भी ऐसा सुझाव नहीं मिलता कि यह बात सच है। आधुनिक फिक्शन में उसे ऐसी स्त्री के रूप में दिखाया जाता है जिसने यीशु पर डोरे डालने की कोशिश की या यहां तक कि उसकी पत्नी बन गई। बहुत से लोग गलत ढंग से मरियम को उस स्त्री से मिलाते हैं जो व्यभिचार करते हुए पकड़ी गई थी (यूहन्ना 8:1-11) या उस पापिन स्त्री से जो यीशु के पांवों पर रो रही थी और अपने बालों से उन्हें पोंछ रही थी और फिर उन्हें चूमा और सुगंधित इत्र के साथ उनका अभिषेक किया (लूका 7:37, 38)। वह इनमें से कोई नहीं थी परन्तु वह थी कौन?

मरियम मगदला नामक स्थान की रहने वाली थी जो गलील की झील के दक्षिण पश्चिमी तट पर था (15:39 पर टिप्पणियां देखें)। वह यीशु से प्रेम करती थी परन्तु उनके सम्बन्ध में शारीरिक प्रेम वाली कोई बात नहीं थी। उससे उसका प्रेम करने का कारण था कि यीशु ने उसमें से सात दुष्टात्माएं निकाली थीं (मरकुस 16:9; लूका 8:2)। उसके बाद से वह यीशु की समर्पित चेली बन बन गई थी और उसकी सेवकाई में आर्थिक रूप से सहायता करती थी (लूका 8:2, 3)। मरियम उन अन्तिम लोगों में से एक थी जो यीशु की मृत्यु के समय कलवरी के पास रहे थे (27:56; मरकुस 15:40; यूहन्ना 19:25), और वह पुनरुत्थान की सुबह कब्र में जाने वाले पहले लोगों में से एक थी (मरकुस 16:1)। मरकुस 16:9 के अनुसार यीशु ने सबसे पहले उसी को दिखाई दिया था।

टिप्पणियां

[1]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर*, 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक डब्ल्यू. डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 746. [2]वही, 386. [3]यह वाक्यांश प्रेरितों 20:7 में भी मिलता है जहां चेले रोटी तोड़ने के लिए इकट्ठा हुए थे। इस आयत में NEB में इस वाक्यांश का गलत अनुवाद "शनिवार रात" किया गया है। [4]वही, 909–10. [5]यूहन्ना ने मरियम मगदलीनी के "सप्ताह के पहिले दिन ... भोर को अंधेरा रहते ही" आने का वर्णन किया है (यूहन्ना 20:1)। यह तथ्य कि उसने अकेले मरियम मगदलीनी का उल्लेख किया और आकाश अभी धुंधला था, के कारण कई विद्वान यह कहते हैं कि यह सुसमाचार के सहदर्शी विवरणों में बताए गए दौरे से पहले का दौरा था। परन्तु सुसमाचार के विवरणों को इकट्ठा पढ़ने पर उसके अन्य स्त्रियों के साथ पहले आने की बात मिलती है। यूहन्ना ने मरियम मगदीनी पर फोकस किया चाहे वह दूसरी स्त्रियों के साथ आई थी। इसके अलावा सूर्य निकलना आरम्भ होने पर भी अभी अंधेरा ही है। यूहन्ना सहदर्शी लेखकों की तरह ही उसी दृश्य की बात कर रहा था परन्तु अलग दृष्टिकोण से। [6]*जौंडरवन इलस्ट्रेटड बाइबल बैकग्राउंड्स कमैंट्री*, अंक 1, *मैथ्यू, मार्क, लूक*, संपा. क्लिंटन ई. अरनोल्ड (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन, 2002), 185 में माइकल जे. विलकिंस, "मैथ्यू।" द *जौंडरवन पिकटोरियल इन्साइक्लोपीडिया ऑफ द बाइबल*, संपा. मैरिल सी. टैनी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1975), 2:179 में डी. आर. बोवस, "अर्थकुवेक।" [7]जैक पी. लुईस, द *गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू*, पार्ट 2, द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 169. [8]वही। [9]रॉबर्ट एच. गुंड्री, *मैथ्यू: ए कमैंटरी आन हिज लिटरेरी एंड थियोलॉजिकल आर्ट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1982), 588. [10]जी उठी अपनी देह में यीशु में दीवारों के बीच में से निकल जाने की योग्यता थी (यूहन्ना 20:19, 26)।

[11]ध्यान दें कि स्वर्गदूत ने भयभीत पहरेदारों से किसी प्रकार के शांति देने वाले शब्दों के साथ बात नहीं की। [12]विलकिंस, 185. [13]डग्लस आर. ए. हेयर, *मैथ्यू*, इंटरप्रिटेशन (लुइसविल्ले: जॉन नॉक्स प्रैस, 1993), 331. देखें जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 4.8.15; मिशनाह *रोश होशनाह* 1.8. [14]लियोन मौरिस, द *गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू*, पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 740. [15]लुईस, 171. [16]जस्टिन मार्टिर *डायलॉग विद ट्रायफो* 108. [17]देखें जोसेफस *अगेंस्ट अपियन* 2.25. उनका कम रुतबा इस फार्मूले में रखा गया है "स्त्रियां, दास और अवयस्क" (मिशनाह *सक्काह* 2.8; *बेराकोथ* 3.3)। [18]विलकिंस, 181 से लिया गया।

पुनरुत्थान के बाद के चालीस दिनों के दौरान मसीह के दर्शन	
1. कब्र पर मरियम मगदलीनी को	मरकुस 16:9–11; यूहन्ना 20:11–18
2. स्त्रियों को जो कब्र से चली गई थीं	मत्ती 28:8–10
3. यरूशलेम में पतरस को	लूका 24:34; 1 कुरिन्थियों 15:5
4. इम्माउस के मार्ग पर दो चेलों को	मरकुस 16:12, 13; लूका 24:13–32
5. यरूशलेम में अटारी वाले कमरे में दस प्रेरितों को (थोमा को छोड़)	मरकुस 16:14; लूका 24:36–43; यूहन्ना 20:19–25
6. यरूशलेम में अटारी वाले कमरे में ग्यारह प्रेरितों को (थोमा सहित)	यूहन्ना 20:26–29; 1 कुरिन्थियों 15:5
7. गलील की झील के पास सात चेलों को	यूहन्ना 21:1–23
8. गलील में पहाड़ पर ग्यारह प्रेरितों को	मत्ती 28:16–20; मरकुस 16:15–18
9. 500 से अधिक चेलों को	1 कुरिन्थियों 15:6
10. प्रभु के भाई याकूब को	1 कुरिन्थियों 15:7
11. जैतून के पहाड़ पर	मरकुस 16:19; लूका 24:44–53; प्रेरितों 1:3–8; 1 कुरिन्थियों 15:7